Vol 5 Issue 10 April 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldgrt.lbp.world

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

GRT

''आलोचना का उद्देश्य तथा आवश्यकता''

होळकर रविंद्र वसंत
टी. वाय. बी. ए. हिंदी विभाग,
मु. सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर, ता. बारामती, जि. पुणे.

प्रस्तावना : –

'आलोचना' आधुनिक युग की साहित्य क्षेत्र को मिली सर्वक्षेष्ठ देन है। 'आलोचना' कला और साहित्य के क्षेत्र में ही बल्कि विविध क्षेत्रों में वर्णन की क्षमता रखती है। ''किसी वस्तु या पदार्थ के संदर्भ में अपना मत प्रदर्शित करते हुए उसके गुण दोषों की चर्चा करना आलोचना कहलाती है।'' परंतु साहित्य के क्षेत्र में आलोचना का अनन्य साधारण महत्व है।

मॅथ्यु ऑर्नाल्ड के अनुसार ''आलोचना को तटस्थ भाव से वस्तु के वास्तविक स्वरूप के ज्ञान का अनुभव और प्रयास करना चाहिए।''

इस अर्थ से वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराने के लिए आलोचना की आवश्यकता होती है। इसे मैंने अपने 'अध्ययनार्थ विषय' के लिए चुना है।

आलोचना का स्वरूप एवं महत्व :–

आलोचना का प्रयोजन क्या है? यही मूल प्रश्न है। साहित्य और आलोचना का नजदीकी संबंध हैं। इन दोनों के परस्पारिक संबंध के विषय में सभी विचारक एकमत नहीं हैं। फिर भी साहित्याचार्यों ने अनेक प्रकार से आलोचना के प्रयोजन पर विचार है। इस संदर्भ में बाबु गुलाबराय का कथन उल्लेखनीय है,

''आलोचना का मूल उद्देश्य कवि कृति का सभी दृष्टिकोणों से आस्वादित पाठकों कर इस प्रकार आस्वादन में सहायता देना तथा उनकी रूचि को परिमार्जित करना एवं साहित्य की गति निर्धारित करने में योग देना है।''

इस प्रकार सत् को साहित्य को प्रोत्साहित करना और असत साहित्य का निराकरण करना ही आलोचना का उद्देश्य स्वीकार किया गया है।

आलोचना का उद्देश्य युगानुरूप साहित्य की प्रतिष्ठा स्थापित करना तथा उसका मूल्यांकन करना ओलाचना का प्रमुख साधन है। इनकी सहायता से वह साहित्य की समिक्षा करता हुआ युगानुरूप मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। समय की गति के साथ ही साथ साहित्य के प्रतिमान भी परिवर्तीत होते रहते हैं। कुशल समीक्षक एवं आलोचक ही साहित्य को समुचित मार्ग प्रदान करता है।

जीवन के चिरंतन सत्य का दर्शन :–

जीव शाश्वत सत और अखंड होता है। यदि रचनाकार के समक्ष आलोचना का निर्देशन न हो तो उनके खंडित होने की आशंका हो सकती है। दूसरी ओ प्रत्येक युग में आलोचना उन अखंड सत्यों का दर्शन कराती रहती है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान को वह अविरल रूप में व्यक्ति–वक्ति तक पहुँचाती है। इस ओर देखते हुए पाश्चात्य आलोचक मैथ्यु आर्नाल्ड ने कहा है –

''आलोचना का मार्ग उस विचार द्वारा निर्दिष्ट होता है, जो उसके अस्तित्व का विधान है, उसका कर्तव्य है।''

साहित्य के मार्ग का उद्घाटन :–

साहित्यालोचन का प्रमुख उद्देश्य है, साहित्य के मर्म को उद्घाटित करना। यहॉ इस आलोचना में रत आलोचक, रचनाकार एवं पाठक के मध्य वही भूमिका निभाता है, जो के एक दूसरे की भाषा न जाननेवाली दो व्यक्तियों के बीच एक दूभाषिकिए की होती है।
इस प्रकार आलोचना की उपादेयता एवं उद्देश्य स्वयं सिद्ध है। वह यहॉ साहित्य की व्याख्या करती है, उसके प्रभाव एवं सामर्थ्य का अंकन करती है। उस पर निर्णय देती है, वह जीवन के सत्य को भी अक्षुण्ण बनाए रखने में सहायक होती है। इस आलोचना में देश विदेश के आचार्यो द्वारा बताए गए आलोचना के प्रयोजन इस प्रकार हैं –

1. लेखकों का पथ प्रदर्शन या कवि षिक्षा :–

आलोचना में लेखकों के पथ प्रदर्शन का सिद्धांत पाश्चात्य आलोचना सिद्धांत में विशेष प्रचलित है। कहा जाता है कि कॉलरिज ने वर्डस्वर्थ को आलोचना द्वारा उसका मार्ग प्रशस्त किया था। अरस्तू के अनुयायों ने भी आलोचना के संबंध में इस पक्ष की प्रतिष्ठा की – ''आलोचना का पगयोजन है लेखक का मार्ग पगदर्शन रेना और जनता के रूचि के पराष्ठ के लिए विधान बनाना। केवल कवि और पाठक के अतिरिक्त कवि की दृष्टि से नितांत उपयोगी वस्तु है। आलोचक पूर्वग्रह मुक्त होकर कृति के गुण–दोषों का संतुलित विवेचन करता है। इसमें कवि की उत्साह वृत्ति होती ही है लेकिन काव्य तत्वों की शिक्षाभी मिलती है। साथ ही विचारों की ..... तथा काव्यशिल्प का प्रांजलता प्राप्त होती है। इस प्रकार आलोचना से कृतिकार को अपनी रचना के गुण–दोषों का ज्ञान होता है। और भविष्य में अनुभमति की दृष्टि से प्रौढ तर रचना के निर्माण का नूतन उत्साह प्राप्त होता है।''

2.अच्छे लेखन के सिद्धातों का अन्वेशण और प्रयोग :–

लेखकों का पथप्रदर्शन या कवि शिक्षा की अपेक्षा लेखकों को सिद्धांतों की अन्वेशण और प्रयोग आलोचना का अपेक्षा कृत और अधिक उदात्तक प्रशेजन है। आलोचना अपने कार्य के लिए सुंदर कसौठी की खोज करती है। लेखक के सिद्धांतों का अन्वेशण्स करती संसार के श्रेष्ठ आलोचक ने विशेष कर ड्राईडन, जॉनसन, कॉलरिज तक और वर्तमान युग में क्रोंचे, आई. ए. रिचर्ड, टी. एस. इलियट आदि सभी ने अच्छे सिद्धातों लेखन का अन्वेशण और प्रयोग आलोचना का महत्वपुर्ण उद्देश्य स्वीकार किया।

3. लोकरूचि का परिष्कार :–

पाठको की दृष्टी से आलोचना का एक मात्र प्रयोजन लोकरूचि का परिष्कार है। इस लिए आलोचक को पाठको का पथप्रदर्शक भी कहा जाता है। आलोचना का प्रयोजन यह बताता है कि किसको प्रिय रूचिकार समझकर स्वीकार करें। अपनी व्याख्या द्वारा आलोचना पाठकों को काव्य का मर्म समझाती है। और काव्यानुशीलन द्वारा उन्हें मर्म (अच्छा ज्ञान) समझाती है। रूचि का परिष्कार करती है। और पाठकों को रसास्वाद कराती है।

4.अभिप्रशंसन :–

कृति या कलाकार के अभिप्रशंसन को भी आलोचना का कार्य स्वीकार किया गया है। यह कार्य आलोचना के मूल स्वरूप के..... .....है। आलोचना का उद्देश्य कृति की व्याख्या करना, उसका विश्लेषण करना, विवेचन करना है। आलोचना का उद्देश्य छिद्रान्वेषण नहीं तो अभिप्रशंसन भी है। आलोचना हमारे सामने साहित्य के समस्त सुंदर अंश का प्रदर्शन करती है। जिसका हमें आकलन होता है। वह काव्य या साहित्य के प्रति जाग्रत कराता है। सुंदर कृतियों के मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है रसास्वादन द्वारा दोष दिखाने की प्रवृत्ति का विरोध और कृति की ओर संकेत करती है। इस रूप में अभिप्रशंसन आलोचना का महत्वपुर्ण प्रयोजन है।

5. सत असत साहित्य का विश्लेषण :–

इस प्रयोजन के अंतर्गत आलोचना के दो कार्य आते हैं। 1. सत साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहन देना। 2. असत साहित्य का निराकरण करना। इस प्रयोजना की सिद्धि आलोचक को सजगता तथा निःपक्षता की आवश्यकता रखती है। आलोचना सत् साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहन देती है। तथा असत् साहित्य का निराकरण भी करती है। अन्यथा पाठकों तथा लेखकों को भ्रम हो जाएगा। इस प्रयोजन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का संकेत भी मिलता है।

6.साहित्य की गतिविधि का नियम :–

साहित्य की गतिविधि का नियमन और इसका संबंध लेखकों के पथ प्रदर्शन से भी है। आलोचना का कर्तव्य कर्म या दायित्व है कि वह साहित्य को पथ भ्रष्ट होने से रोखे।

7.सामाजिक उपादेयता :–

आलोचना जनता की सेवा के लिए है। यह सिद्धांत असलोचना को सामाजिक उपादेयता से संबंधित उपयोगिता का आधार है। आलोचना द्वारा जनता की सेवा करने का सिद्धांत सभी प्रकार की आलोचना में निहित रहता है। क्योंकि पाठक (समाज) को साहित्य का रसास्वादन कराती है। यह प्रयोजन भी नैतिक है। पाश्चात्य आलोचक का कथन है कि आलोचना का कार्य कि समाज में स्वस्थ रूचि निर्माण करके समाज को समून्नत करे और उसके शील तथा सदाचार को स्थापित करें।

8.महत्व की सिद्धि :–

आलोचना का यह प्रयोजन कृति के व्याख्या के रूप में उसके महत्व की सिद्धि करना है। सभी आलोचकों की आलोचना में यह

प्रयोजन महत्वपूर्ण है।
इस प्रकार आलोचना के विभिन्न सारे प्रयोजन है। किसी आलोचनात्मक कृति में कोई विशेष प्रयोजन हो ऐसी बात नही तो उसमें अनेक प्रयोजनों की प्रेरणा हो सकती है। मूल रूप में यह साहित्यिक प्रयोजन है। अत : उनका वैसा प्रयोजन ही होना चाहिए।

निष्कर्षत :–

इस प्रकार आलोचना का साहित्य के क्षेत्र में अन्नय साधारण महत्व है। आलोचना का प्रमुख उद्देश्य किसी भी साहित्यिक कृति की आलोचना करते हुए उसके मर्म को, उद्देश्य को पाठकों उवं श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करना होता है। इस अर्थ से

आलोचना, लेखक कृति और पाठक पर अनन्य साधारण उपकार करती है। अत : आलोचना का उद्देशय व्यापक है। इसमें साहित्य के मर्म का काम आलोचना के पथ प्रदर्शन करणे का काम आलोचना के उद्देश्य में किया जाता है। इसलिए आलोचना का उद्देश्य महत्वपुर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ. सुरेश कुमार जैन
प्रा. महावीर कंडारकर
2.भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य – चिंतन
डॉ. सभापति मिश्र
3.साहित्यशास्त्र
डॉ. संजय नवले
4.भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत
डॉ. सुरेश अग्रवाल

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.www.oldgrt.lbp.world